निष्कर्ष

रूदन गीत हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है इससे हमारे संस्कारों के साथ ही यथार्थवाद तथा आदर्शवाद दोनों का सुंदर सामजस्य दिखाई देता हैं। रूदन गीतों में परिवार के जीवन वृत्तांत का वर्णन मिलता हैं। इस प्रकार के गीतों में भाई- बहन, माता-पुत्री और पति-पत्नी के आर्दश चरित्र का यथार्थ रूप दिखाई देता है।

रुदन गीतों में जन-जीवन की आशा-निराशा, सुख-दुख, विषाद आदि सभी तत्वों एवं भावनाओं के रूप समाहित रहते हैं । श्री मैलिनोवस्की के अनुसार संस्कृति मानव की प्राणिशास्त्रीय आवश्यकताओं द्वारा मानव जनित आविष्कार हैं। मानव का शारीरिक- मानसिक अस्तित्व जिन साधनों से बना रहता हैं। उन साधनों की समग्रता को ही संस्कृति कहते हैं। मैलिनोवस्की ने मानव की सात मूलभूत आवश्यकताओं की बात की जिसमें से एक मूलभूत आवश्यकता स्वास्थ्य हैं। मनुष्य के स्वास्थ्य का संबंध मानसिक स्थित पर निर्भर करता हैं। मनुष्य की ज्यादातर बिमारियां मानसिक विकृति से संबंधित होती हैं। और मनुष्य के मस्तिष्क पर उसके पर्यावरण और परिस्थिति का प्रभाव पड़ता हैं ये सुख- दुख के रूप में मस्तिष्क को प्रभावित करती हैं। कभी जब मनुष्य बहुत दुखित या अवसाद में होता हैं तो उसके आँखों से आँसू आ जाते हैं औऱ बहुत ज्यादा दुख होता हैं तो मनुष्य पागल हो जाता हैं , और उस अवस्था में मस्तिष्क की तंत्रिका तंत्र विकृत हो जाता हैं। जिससे वह कभी हसने, कभी रोने लगता हैं। कभी गाने लगता हैं। ये क्रियाएं उसके शरीर को संतुलित करने के लिए होती हैं। शरीर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति विभिन्न मनोग्रंथियों के माध्यम से करता हैं। मनुष्य का मस्तिष्क भी हंसने और रोने से स्वस्थ होता हैं। हँसने रोने का माध्यम गीत कहानियाँ कथाएँ होती हैं। जिसमें उसका मन विश्राम करता हैं , जिससे उसको ताजगी मिलती हैं।

1- रूदन गीत भी मानव मस्तिष्क का सहज उद्गार हैं। जिसके माध्यम से वह अपने मस्तिष्क को विश्राम देता हैं। यह रूदन गीत का वैज्ञानिक कारण हैं।

रूदन गीत भावना प्रधान होते हैं। बिना दु;खद भावना के इनका जन्म नहीं होता हैं। इसका प्रमाण राजस्थान के रुदाली करने वाली महिलाओं के परिपेक्ष्य में बनी फिल्म से भी पता चलता हैं। उसमें एक महिला हैं , जिसका पति निकृष्ट स्वभाव का हैं। वह शराब पीता हैं अपने परिवार और पत्नी से उसका कोई मतलब नहीं रहता हैं। जब वह जहरीली शराब पीने के कारण मर जाता हैं तो उसकी पत्नी को कोई कष्ट नहीं होता हैं। उसी प्रकार वह अपनी सास और पुत्र के मर जाने पर भी नहीं रोती हैं। क्योंकि वह भावात्मक रूप से उनसे नहीं जुडी रहती हैं। लेकिन जब वह एक महिला से मिलती हैं जो परंपरागत रूप से रोने का पेशा करती हैं तो वह उसके बारे में जानने की कोशिश करती हैं , जिससे उस महिला को पेशेवर महिला के जीवन कष्टों, मजबुरियों का पता चलता हैं और वह पेशेवर महिला इस महिला के भावनाओं को जागृत करने की कोशिश करती हैं। उसके खाने पीने का ख्याल रखने लगी – एक दिन पेशेवर महिला दूर गांव में रूदाली करने जाती हैं और वही किसी कारणवश मृत्यु हो जाती हैं । जिसकी खबर कठोर ह्रदय वाली महिला को मिलती हैं तो वह पेवर महिला के चरित्र-कष्टों को सोचकर रोती हैं, जिससे उसके मानसिक तनाव से मुक्ति मिलती हैं ।

2- रूदन गीत मुख्यतः दो रूपों में मिलते हैं।

- ♦ संयोगातमक
- ♦ वियोगात्मक

रुदनगीत मुख्यतः महिलाओं द्वारा मुख्यतः तीन अवसरों पर गाए जाते हैं। ये सभी वियोगात्मक होते हैं ।

1. किसी प्रिय व्यक्ति , पशु की मृत्यु होने पर
2. शादी , गवना अन्य अवसरों या भावी बेटियों के विदाई के अवसर पर ये गीत गाए जाते हैं ।
3. तथा महिलाओं द्वारा अपने प्रिय व्यक्ति, भाई, पति, माता-पिता के बहुत दिनों तक दूर रहने पर उनके विरह में रूदन गीत गाए जाते हैं ।

संयोगात्मक रुदनगीत में भी महिलाएं जब कभी अपनी माँ से मिलती हैं तो पुरने बातों को याद कर रूदन करते हुए गीत गाती हैं।

रूदन गीत के सामाजिक कारण

रूदनगीतों के सामाजिक कारण मुख्यतः निम्न होते

1- परंपराएं

2- पर संस्कृतिकरण

3- संचार माध्यमों की कमी

4- धर्म संस्कार का प्रभाव होना

1-परंपराएं-

पहले गाँवों तथा शहरों में संयुक्त परिवार हुआ करता था जिसमें परिवार के एक या दो व्यक्ति ही कार्य करने वाले होते थे बाकी सब उन पर आश्रित हुआ करते थे, जिसमें वे सभी एक दूसरे के साथ ज्यादा समय बिताते थे और भावात्मक रुप से जुड़े होते थे इस परिवार में दादा- दादी,

चाची- चाची उनके बच्चे सभी समिल्लित होते थे, अतः जब किसी परिवार से लड़की शादी औऱ विदाई होती थी तो भावात्मक लगाव ज्यादा होने के कारण रुदन किया करती थी।

परसंस्कृतिकरण

पहले ज्यादातर महिलाएं अशिक्षित थी, पितृसत्तात्मक प्रभाव ज्यादा हावी था। महिलाएं घर का चूल्हा चौका, काम-काज तक सीमित थी अतः वे पिता , भाई आदि पर आश्रित थी। उन्हें अपने लिए कोई फैसला करने का कोई अधिकार नहीं था। अतः जब उनका संबंध शादी के माध्यम से अन्यत्र कर दिया जाता था जिसके विषय में उन्हें बिल्कुल पता नहीं होता था विवाह के बाद लड़की अपने ससुराल जाने लगती है तो वह अपने बचपन की यादों को याद करके अपने माता-पिता से रोकर सांझा करती है । लेकिन अब ऐसा कम हो गया है।

लड़कियों को अब पढ़ाया-लिखाया जाता है। औऱ लड़कियां शिक्षित होने के साथ नौकरी पेशा को अपना रही हैं, जिससे वे स्वाबलंबी हो गयी हैं। अतः उन्हें नौकरी औऱ शिक्षा के परिवार से दूर होना पड़ता हैं। यह उनकी आदत में शुमार हो जाता है। वे अपने जीवन साथी को चुनने का फैसला खुद कर ले रही हैं। अब परिवारों में उनकी सहमती ली जा रही हैं। वे अपने होने वाले पति से मलकर एक –दूसरे को जान समझ ले रहीं हैं जिसके कारण लड़की को शादी के बाद ससुराल जाने पर बहुत कम ही रोते हुए देखा जाता है।

संचार माध्यम की कमी

पहले संचार के माध्यम बहुत कम थे। लोगों का बहुत दिनों तक अपने संबंधियों से मिलाप नहीं हो पाता था। अगर वे परदेश में रहते या घर से दूर होते तो उनके घर की महिलाएं चाहे वह पत्नी, बहन, मां कोई हो, भावात्मक जुड़ाव की कुछ वजह से उस दूर हुए व्यक्ति के प्रति रुदन करती थी

जो विरह की वजह से होता था । अब मोबाइल, ट्रेने आदि संसाधन हो गए हैं, जिससे व्यक्ति हमेशा अपने परिवार से भावात्मक रुप से जुड़ा रहता है । उसे पता ही नहीं चलता की वह एक दूसरे से दूर हैं। अतः संचार भी भावात्मक रुदन का एक कारण था । अब शादी-विवाह हुआ नहीं कि शादी के बंधन में बंधने वाले लड़के –लड़कियां एक दूसरे से संचार के माध्यम से जुड़ जाते हैं । अपनी हर बातों को पहले ही शेयर कर लेते हैं जिससे शादी के बाद विदाई या बहुत दिनों तक दूर रहने का उन्हें अहसास नहीं होता क्योंकि वे फोन से एक –दूसरे के दु;ख- सुख को साझा कर लेते हैं।

धर्म संस्कार का प्रभाव

पहले समाज पर धर्म का विशेष प्रभाव था समाज का नियंत्रण धर्म के माध्यम से होता था । हिंदू धर्म में संस्कार का विधान है । जिसमें सोलह संस्कार हैं। हर संस्कार के अपने अलग-अलग महत्व हैं, लेकिन सभी संस्कार शुभ की कामना के प्रतीक माने जाते हैं । इन सभी संस्कारों पर गीत गाए जाने की परंपरा हैं, इसमें विदाई और मृत्यु संस्कार ऐसे हैं जिनमें रुदन गीत गाया जाता है। जिसमें मंगल की कामना निहित होती है । अगर इन अवसर पर महिला रुदन गीत नहीं गाती तो इसे अशुभ मानते हैं । या परिवार की महिलाओं की निंदा करते हैं ।

रुदन गीत में पाये जाने वाले प्रतीक-

रुदन गीतों में किसी व्यक्ति, वस्तु का संबंध भिन्न प्रतीक के रुप में भी लेते हैं । जैसे –

पति के संबोधन के लिए रमवा अर्थात भगवान राम को प्रतीक के रुप में लेती हैं । जो दुख को नष्ट करने वाले सुख प्रदान करने वाले होते हैं ।

वस्तु में – एक गीत में मृत व्यक्ति से वस्तुओं का संबंध बताया गाय जिसमं निम्न प्रतीक मिलें

हरे बांस की –मृत्यु शैया का प्रतीक या दुख का प्रतीक

जौ- धर्म का प्रतीक

गाय- गाय को शुभ का प्रतीक माना गया है।

अतः रुदन गीतों से पता चलता हैं। जब व्यक्ति किसी मानव या प्राणी के बहुत भावात्मक रुप से नजदीक से जुड़ा होता हैं तो उसके बिछड़ने पर उसे भावात्मक कष्ट भी होता हैं । जिसकी अभिव्यक्ति पुरूष आंसू बहाकर औऱ महिलाएं रुदन गीत गाकर अभिव्यक्त करती हैं।

रुदन गीत का उतना ही महत्व हैं जैसे शरीर में भिन्न-भिन्न क्रियाओं के संपादन के लिए भिन्न-भिन्न ग्रंथियां काम करती हैं। और मानव शरीर को संतुलित रखती हैं। उसी प्रकार रुदन गीत भी अश्रु ग्रंथि के माध्यम से अवसाद दूर करने का माध्यम हैं।

सुझाव रुदन गीत में बहुत सी अतीत की वस्तुओं परंपराओं आदि का पता हैं और रुदन गीत अशिक्षित, आदिम लोगों का गीत हैं ऐसा लोकगीत से ही पता चलता हैं। लोकगीत को अतीत के पन्नों का दर्पण कहा जाता हैं, अतः इस यूरोपीय देशों की तरह भारत में भी संकलित करने का कार्य किया जाना चाहिए।